सरसों विज्ञान मेला

किसान खेती में करें वैज्ञानिक तकनीकों का समावेश : डॉ. आनंद

भरतपुर. राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान निदेशालय में आयोजित सरसों विज्ञान मेले में मौजूद किसान व कार्यक्रम में सम्मानित करते अतिथि।

पत्रकों का विमोचन किया

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

भरतपुर. सरसों अनुसंधान निदेशालय में शनिवार को सरसों विज्ञान मेले का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के उपमहानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. आनंद कुमार सिंह के मुख्य आतिथ्य में किया गया। इस अवसर पर डॉ. सिंह ने कहा कि देश में खाद्य तेलों की पूर्ति करने के लिए तिलहन का उत्पादन बढ़ाना होगा। उन्होंने किसानों से कहा खेती में वैज्ञानिक तकनीकों का समावेश करें ताकि खेती की लागत को कम करके उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि किसान अनुसंधान प्रक्षेत्रों का अवलोकन करें, वैज्ञानिकों से संवाद करें और विभिन्न प्रजातियों के बारे में जानकारी प्राप्त करके खेतों पर अच्छी प्रजातियों की बुवाई करें ताकि उनके उत्पादन में बढ़ोत्तरी हो। उन्होंने कहा कि सरकार किसानों को लागत से डेढ़ गुना अधिक मूल्य प्रदान करने की योजना बना रही है। इससे किसानों को लाभ होगा। कृषि सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त आयुक्त (तिलहन) डॉ. अनुपम बारिक ने कहा कि राई सरसों की फसल सभी तिलहनी फसलों में महत्वपूर्ण है। इसका खाद्य तेल उत्पादन में सर्वाधिक योगदान है। उन्होंने किसानों को मधुमक्खी पालन अपनाने की सलाह दी। मधुमक्खी पालन से शहद से अतिरिक्त आमदनी प्राप्त होगी और फसल उत्पादन में बढ़ोत्तरी होगी। निदेषालय के निदेशक डॉ. पीके राय ने कहा कि वैज्ञानिकों की ओर से विकसित उन्नत किस्मों एवं तकनीकों को किसानों द्वारा अपनाकर तिलहनों में भी आत्मनिर्भरता प्राप्त करना संभव है। इस अवसर पर कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक योगेश शर्मा, उपनिदेषक (कृषि) देशराज सिंह, कृषि महाविद्यालय कुम्हेर के डॉ. अमर सिंह एवं कृषि अनुसंधान उपकेन्द्र के प्रभारी डॉ. उदयभान सिंह ने भी विचार व्यक्त किए। अतिथियों ने पांच तकनीकी प्रसार पत्रकों का विमोचन किया। इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के विभिन्न अनुभागों और सरसों की खेती की उन्नत जानकारी देने के लिए प्रदर्शनी भी लगाई गई। संचालन डॉ. पंकज शर्मा ने किया।

खेती में वैज्ञानिकता लाएं और उत्पादकता बढ़ाएं: डॉ. आनन्द कुमार सिंह

एक दिवसीय सरसों विज्ञान मेले का हुआ आयोजन

मनोज शर्मा

भरतपुर, (पंजाब केसरी): देश में खाद्य तेलों की पूर्ति करने के लिए तिलहन का उत्पादन बढ़ाना होगा। देश में खाद्य तेलों की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए काफी मात्रा में आयात करना पड़ता है। इसलिए आवश्यकता है कि आज किसान खेती वैज्ञानिक तरीके से करें। खेती में वैज्ञानिक तकनीकों का समावेश करें ताकि खेती की लागत को कम करके उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है। यह बात शनिवार को सरसों अनुसंधान निदेशालय के 24 वें सरसों विज्ञान मेले के अवसर पर मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उपमहानिदेशक डॉ. आनन्द कुमार सिंह ने किसानों को संबोधित करते हुए कही।

मेले का द्वीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते अतिथि एवं उपस्थित किसान।

इस मौके पर उन्होंने कहा कि किसान अनुसंधान प्रक्षेत्रों का अवलोकन करें, वैज्ञानिकों से संवाद करें और विभिन्न प्रजातियों के बारे में जानकारी प्राप्त करके अपने खेतों पर अच्छी प्रजातियों की बुवाई करें ताकि उनके उत्पादन में बढ़ोत्तरी हो। इस अवसर पर कृषि सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, नई दिल्ली के अतिरिक्त आयुक्त (तिलहन) डॉ. अनुपम बारिक ने कहा कि राई सरसों की फसल सभी तिलहनी फसलों में महत्वपूर्ण फसल है, जिसका खाद्य तेल उत्पादन में सर्वाधिक योगदान है। उन्होंने कहा कि तिलहन को बढ़ावा देने के लिए देश में तिलहनी मेंलों का आयोजन किया जा रहा है ताकि किसानों को उन्नत तकनीके अपनाने के लिए प्रेरणा मिले। उन्होंने सरसों अनुसंधान केन्द्र के योगदान की सराहना करते हुए किसानों से आग्रह किया कि अधिक से अधिक संख्या में इस संस्थान से जुड़कर लाभ उठाएं।

इस अवसर पर निदेशालय के निदेशक डॉ. पी.के. राय ने कहा कि राई-सरसों फसल का भारतीय आर्थिक व्यवस्था में एक विशेष स्थान है। देश में वैज्ञानिकों की ओर से विकसित उन्नत किस्मों एवं तकनीकों को किसानों की ओर से अपनाकर तिलहनों में भी आत्मनिर्भरता प्राप्त करना संभव है। इसके लिए वैज्ञानिकों, प्रसार अधिकारियों एवं किसानों को मिलकर काम करना होगा। किसानों को उन्नत तकनीकों की जानकारी प्राप्त करके उन्हें अपनाना होगा।

इस अवसर पर कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक योगेश शर्मा, उप निदेशक देशराज सिंह, डॉ. अमर सिंह, डॉ. उदयभन सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर अतिथियों की ओर से पांच तकनीकी प्रसार पत्रकों का भी विमोचन किया गया और सरसों अनुसंधान निदेशालय की ओर से किसानों एवं सरसों पौधा प्रतियोगिता के विजेताओं और राई-सरसों के शोध एवं उन्नत तकनीकों के प्रचार-प्रसार में उगेखनीय योगदान के लिए वीरेश मल्टीपरपल फॉरमर्स प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड, भरतपुर एवं उत्थान मस्टर्ड प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड भरतपुर को प्रशस्ति पत्र प्रदान करके सम्मानित किया गया। मेले में कृषि कार्यकर्ताओं सहित1500 किसानों ने भाग लिया।

खेती में वैज्ञानिकता से उत्पादकता बढ़ाएं

सरसों विज्ञान मेले के आयोजन में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उपमहानिदेशक बोले

अमर उजाला ब्यूरो

भरतपुर।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उपमहानिदेशक (फसल विज्ञान), डॉ. आनंद कुमार सिंह ने कहा कि देश में खाद्य तेलों की पूर्ति करने के लिए तिलहन का उत्पादन बढ़ाना होगा।

उन्होनें कहा कि खाद्य तेलों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए काफी मात्रा में आयात करना पड़ रहा है। किसान खेती वैज्ञानिक तरीके से करें। खेती में वैज्ञानिक तकनीकों का समावेश करें ताकि खेती की लागत को कम करके उत्पादकता को बढ़ाया जा सके।

शनिवार को सरसों अनुसंधान निदेशालय में आयोजित 24वें सरसों विज्ञान मेले के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे उपमहानिदेशक ने कहा कि किसान अनुसंधान प्रक्षेत्रों का अवलोकन करें। साथ ही वैज्ञानिकों से संवाद करें तथा विभिन्न प्रजातियों के बारे में जानकारी प्राप्त करके अपने खेतों पर अच्छी प्रजातियों की बुवाई करें जिससे उनके उत्पादन में बढ़ोतरी हो। उन्होंने कहा कि समूह बनाकर कार्य करना चाहिए ताकि आदानों की खरीद, विपणन में लाभ हो सके। किसान अपनी उपज का मूल्य संवर्धन करके बाजार में बेचेंगे तो उसका बाजार में अधिक मूल्य मिलेगा।कृषि सहकारिता, किसान कल्याण विभाग, नई दिल्ली के अतिरिक्त आयुक्त (तिलहन) डॉ. अनुपम बारिक ने कहा कि राई सरसों की फसल सभी तिलहनी फसलों में महत्वपूर्ण फसल है जिसका खाद्य तेल उत्पादन में सर्वाधिक योगदान है।

निदेषालय के निदेशक डॉ. पी.के. राय ने कहा कि राई-सरसों फसल का भारतीय आर्थिक व्यवस्था में एक विषेश स्थान है। देश में वैज्ञानिकों द्वारा विकसित उन्नत किस्मों, तकनीकों को किसानों द्वारा अपनाकर तिलहनों में भी आत्मनिर्भरता प्राप्त करना संभव है। इसके लिए वैज्ञानिकों, प्रसार अधिकारियों एवं किसानों को मिलकर काम करना होगा। किसानों को उन्नत तकनीकों की जानकारी प्राप्त करके उन्हें अपनाना होगा। कृषि विभाग के संयुक्त निदेषक योगेश शर्मा, उप निदेषक कृषि , देशराज सिंह, , डॉ. अमर सिंह , डॉ. उदयभान सिंह ने भी विचार व्यक्त किए।

सरसों अनुसंधान निदेषालय के विभिन्न अनुभागों की ओर से सरसों की खेती की उन्नत जानकारी देने के लिए एक प्रदर्षनी लगाई गई। संचालन वैज्ञानिक डॉ. पंकज शर्मा ने किया।

राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान केंद्र में मेले का शुभारंभ करते अतिथि। अमर उजाला

किसान को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करते अतिथि। अमर उजाला

सरसों की खेती की उन्नत जानकारी के लिए प्रदर्शनी का आयोजन

खेती में वैज्ञानिक तकनीकों का समावेश कर लागत कम करें : आनन्द कुमार

भरतपुर, (निसं)। देश में खाद्य तेलों की पूर्ति करने के लिए तिलहन का उत्पादन बढ़ाना होगा। देश में खाद्य तेलों की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए काफी मात्रा में आयात करना पड़ता है। इसलिए आवश्यकता है कि आज किसान खेती वैज्ञानिक तरीके से करें। खेती में वैज्ञानिक तकनीकों का समावेश करें ताकि खेती की लागत को कम करके उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है।

यह बात आज सरसों अनुसंधान निदेशालय के 24 वें सरसों विज्ञान मेले

■ सरसों विज्ञान मेले का आयोजन

भरतपुर में 24वें सरसों विज्ञान मेले का शुभारम्भ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के उपमहानिदेशक डॉ. आनन्दकुमार सिंह के मुख्य आतिथ्य में हुआ। इस मौके पर डॉ. अनुपम पारीक, डॉ. पीके राय, योगेश शर्मा आदि मौजूद रहे।

के अवसर पर मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उपमहानिदेशक (फसल विज्ञान), डॉ. आनन्द कुमार सिंह ने किसानों को संबोधित करते हुये कही।

उन्होंने कहा कि किसान अनुसंधान प्रक्षेत्रों का अवलोकन करें, वैज्ञानिकों से संवाद करें और विभिन्न प्रजातियों के बारे में जानकारी प्राप्त करके अपने खेतों पर अच्छी प्रजातियों की बुवाई करें ताकि उनके उत्पादन में बढ़ोत्तरी हो। उन्होंने कहा कि समूह बनाकर कार्य करना चाहिए ताकि आदानों की खरीद एवं विपणन में लाभ हो सके। किसान अपनी उपज का मूल्य संवर्धन करके बाजार में बेचेंगे तो उसका बाजार में अधिक मूल्य मिलेगा। सरकार किसानों को लागत से डेढ गुना अधिक मूल्य प्रदान करने की योजना बना रही है जिससे किसानों को लाभ होगा। उन्होंने कहा कि विभिन्न विभागों, अनुसंधान संस्थाओं आदि से जानकारियां प्राप्त करके सरकारी योजनाओं का लाभ उठायें। उन्होंने निदेशालय द्वारा सरसों किसानों के लिए किये जा रहे कार्यों की सरहाना की।

इस अवसर पर कृषि सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, नई दिल्ली के अतिरिक्त आयुक्त (तिलहन) डॉ. अनुपम बारिक ने कहा कि राई सरसों की फसल सभी तिलहनी फसलों में महत्वपूर्ण फसल है जिसका खाद्य तेल उत्पादन में सर्वाधिक योगदान है। उन्होंने कहा कि तिलहन को बढावा देने के लिए देश में तिलहनी मेंलों का आयोजन किया जा रहा है ताकि किसानों को उन्नत तकनीके अपनाने के लिए प्रेरणा मिले। उन्होंने सरसों अनुसंधान केन्द्र के योगदान की सराहना करते हुए किसानों से आग्रह किया कि अधिक से अधिक संख्या में इस संस्थान से जुडकर लाभ उठायें। निदेशालय के निदेशक डॉ. पी.के. राय ने कहा कि देश में वैज्ञानिकों द्वारा विकसित उन्नत किस्मों एवं तकनीकों को किसानों द्वारा अपनाकर तिलहनों में भी आत्मनिर्भरता प्राप्त करना संभव है। इसके लिए वैज्ञानिकों, प्रसार अधिकारियों एवं किसानों को मिलकर काम करना होगा। कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक योगेश शर्मा, उप निदेशक (कृषि) देशराज सिंह, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर के डॉ. अमर सिंह एवं कृषि अनुसंधान उपकेन्द्र के प्रभारी डॉ. उदयभान सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर अतिथियों द्वारा पांच तकनीकी प्रसार पत्रकों का भी विमोचन किया गया और सरसों अनुसंधान निदेशालय द्वारा किसानों एवं सरसों पौधा प्रतियोगिता के विजेताओं और राई-सरसों के शोध एवं उन्नत तकनीकों के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान के लिए वीरेश मल्टीपरपल फॉरमर्स प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड, भरतपुर एवं उत्थान मस्टर्ड प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड भरतपुर को प्रशस्ति पत्र प्रदान करके सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के विभिन्न अनुभागों की ओर से सरसों की खेती की उन्नत जानकारी देने के लिए एक प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी मे, सरसों अनुसंधान निदेशालय के पादप प्रजनन इकाई, शस्य इकाई, मधुमक्खी पालन इकाई, पादप रोग इकाई, जैव प्रोद्यौगिकी इकाईयों के साथ ही कृषि विज्ञान केन्द्र गून्ता, बानसूर, भारतीय कृषि अनुसधान संस्थान पूसा नई दिल्ली, केन्द्रीय शुष्क अनुसंधान संस्थान जोधपुर, केन्द्रीय भेड एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर, कृषि विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर, कृषि विभाग भरतपुर, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, लूपिन संस्थान, शिवम सीड्स, राशि सीड्स आदि संस्थाओं ने भी अपनी स्टॉल लगाकर किसानों को जानकारी दी। मेले में कृषि कार्यकर्ताओं सहित 1500 किसानों ने भाग लिया। संचालन प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पंकज शर्मा ने किया।

सरसों विज्ञान मेला

किसान खेती में करें वैज्ञानिक तकनीकों का समावेश : डॉ. आनंद

भरतपुर. राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान निदेशालय में आयोजित सरसों विज्ञान मेले में मौजूद किसान व कार्यक्रम में सम्मानित करते अतिथि।

पत्रकों का विमोचन किया

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

भरतपुर. सरसों अनुसंधान निदेशालय में शनिवार को सरसों विज्ञान मेले का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के उपमहानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. आनंद कुमार सिंह के मुख्य आतिथ्य में किया गया। इस अवसर पर डॉ. सिंह ने कहा कि देश में खाद्य तेलों की पूर्ति करने के लिए तिलहन का उत्पादन बढ़ाना होगा। उन्होंने किसानों से कहा खेती में वैज्ञानिक तकनीकों का समावेश करें ताकि खेती की लागत को कम करके उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि किसान अनुसंधान प्रक्षेत्रों का अवलोकन करें, वैज्ञानिकों से संवाद करें और विभिन्न प्रजातियों के बारे में जानकारी प्राप्त करके खेतों पर अच्छी प्रजातियों की बुवाई करें ताकि उनके उत्पादन में बढोत्तरी हो। उन्होंने कहा कि सरकार किसानों को लागत से डेढ़ गुना अधिक मूल्य प्रदान करने की योजना बना रही है। इससे किसानों को लाभ होगा। कृषि सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त आयुक्त (तिलहन) डॉ. अनुपम बारिक ने कहा कि राई सरसों की फसल सभी तिलहनी फसलों में महत्वपूर्ण है। इसका खाद्य तेल उत्पादन में सर्वाधिक योगदान है। उन्होंने किसानों को मधुमक्खी पालन अपनाने की सलाह दी। मधुमक्खी पालन से शहद से अतिरिक्त आमदनी प्राप्त होगी और फसल उत्पादन में बढ़ोत्तरी होगी। निदेषालय के निदेशक डॉ. पीके राय ने कहा कि वैज्ञानिकों की ओर से विकसित उन्नत किस्मों एवं तकनीकों को किसानों द्वारा अपनाकर तिलहनों में भी आत्मनिर्भरता प्राप्त करना संभव है। इस अवसर पर कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक योगेश शर्मा, उपनिदेषक (कृषि) देशराज सिंह, कृषि महाविद्यालय कुम्हेर के डॉ. अमर सिंह एवं कृषि अनुसंधान उपकेन्द्र के प्रभारी डॉ. उदयभान सिंह ने भी विचार व्यक्त किए। अतिथियों ने पांच तकनीकी प्रसार पत्रकों का विमोचन किया। इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के विभिन्न अनुभागों और सरसों की खेती की उन्नत जानकारी देने के लिए प्रदर्शनी भी लगाई गई। संचालन डॉ. पंकज शर्मा ने किया।

कार्यक्रम

सरसों विज्ञान मेले में वैज्ञानिकों ने उत्पादन बढ़ाने के लिए नई प्रजातियों की दी जानकारी

वैज्ञानिक पद्धति से खेती में उत्पादन बढ़ाएः सिंह

भास्कर संवाददाता | भरतपुर

देश में खाद्य तेलों की पूर्ति करने के लिए तिलहन का उत्पादन बढ़ाना होगा। देश में खाद्य तेलों की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए काफी मात्रा में आयात करना पड़ता है। इसलिए आवश्यकता है कि किसान खेती वैज्ञानिक तरीके से करें। खेती में वैज्ञानिक तकनीकों का समावेश करें। यह बात सरसों अनुसंधान निदेशालय के 24 वें सरसों विज्ञान मेले के अवसर पर मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली उप महानिदेशक डॉ. आनंद कुमार सिंह ने कही।

उन्होंने कहा कि किसान अनुसंधान प्रक्षेत्रों का अवलोकन करें, वैज्ञानिकों से संवाद करें। विभिन्न प्रजातियों के बारे में जानकारी प्राप्त करके अपने खेतों पर अच्छी प्रजातियों की बुवाई करें ताकि उनके उत्पादन में बढ़ोत्तरी हो सके। डॉ. सिंह ने कहा कि किसान अपनी उपज का मूल्य संवर्धन करके बाजार में बेचेंगे तो उसका बाजार में अधिक मूल्य मिलेगा। सरकार किसानों को लागत से डेढ़ गुना अधिक मूल्य प्रदान करने की योजना बना रही है, जिससे किसानों को लाभ होगा। कृषक सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग नई दिल्ली अतिरिक्त आयुक्त तिलहन डॉ. अनुपम बारिक ने कहा कि राई सरसों की फसल सभी तिलहनी फसलों में महत्वपूर्ण फसल है। उन्होंने कहा कि तिलहन को बढावा देने के लिए देश में तिलहनी मेलों का आयोजन किया जा रहा है ताकि किसानों को उन्नत तकनीकों अपनाने को प्रेरणा मिले। निदेशालय निदेशक डॉ. पीके राय ने कहा कि राई-सरसों फसल का भारतीय आर्थिक व्यवस्था में एक विशेष स्थान है। देश में वैज्ञानिकों द्वारा विकसित उन्नत किस्मों एवं तकनीकों को किसानों द्वारा अपनाकर तिलहनों में भी आत्मनिर्भरता प्राप्त करना संभव है। उन्होंने कहा कि जिले के किसानों में उन्नत तकनीकों के प्रति अधिक जागरूकता है, इसलिए यहां विगत वर्षों में राई-सरसों कि उत्पादकता में काफी बढ़ोतरी हुई है।इस अवसर पर कृषि विभाग संयुक्त निदेशक योगेश शर्मा, उप निदेशक कृषि देशराज सिंह, कृषि महाविद्यालय कुम्हेर डॉ. अमर सिंह, अनुसंधान उपकेन्द्र प्रभारी डॉ. उदयभान सिंह ने भी विचार रखे। इस अवसर पर अतिथियों द्वारा पांच तकनीकी प्रसार पत्रकों का भी विमोचन किया गया और सरसों अनुसंधान निदेशालय द्वारा किसानों एवं सरसों पौधा प्रतियोगिता के विजेताओं को उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। अनुसंधान निदेशालय के विभिन्न अनुभागों की और से सरसों की खेती की उन्नत जानकारी देने के लिए एक प्रदर्शनी लगाई गई। संचालन प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पंकज शर्मा ने किया।

भरतपुर. सेवर स्थित अनुसंधान निदेशालय में सरसों मेला के दौरान मौजूद किसान।